ARYAVART SHODH VIKAS PATRIKA
RNI TITLED NO. UPBIL04292
RNI REG. NO. UPBIL/2014/66218 **PP. No.- 222-223**
I S S N NO. - 2347 – 2944 (Print)
e–I S S N NO.- 2582 – 2454 (Online)
Vol.-19, No.-II, Issues-36, YEAR-April-June. 2025

महिला सशक्तिकरण : विकास का आधार एक सामाजिक दृष्टि

डॉ0 राजीव कुमार पोद्दार
अतिथि व्याख्याता– समाजशास्त्र विभाग, सबौर महाविद्यालय, सबौर, भागलपुर, तिलकामांझी भागलपुर विश्वविद्यालय, भागलपुर, (बिहार) भारत

Received-03.06.2025, Revised-12.06.2025, Accepted-20.06.2025 E-mail : drrajeevkbgp@gmail.com

सारांशः ***जीवन की पूर्णता के लिए युगीन व्यवस्था एवं परिस्थितियों की महती भूमिका होती है। स्वामी विवेकानंद ने कहा था समाज रूपी गरुड़ के स्त्री और पुरुष दो पंख होते हैं। यदि एक पंख सरल तथा दूसरा दुर्बल हो तो उसमें गगन छूने की शक्ति कैसे निर्मित होगी । सशक्त महिला व सशक्त समाज ही राष्ट्र की उन्नति में एक दूसरे के पूरक है। महिला सशक्तिकरण का अभिप्राय है महिलाओं को आध्यात्मिक, राजनीतिक, मनोसामाजिक, शैक्षणिक व व्यवसायिक रूप से सशक्त करना। व्यवस्था बदलने के लिए संपन्न महिलाओं को संसाधनों से युक्त महिलाओं को समाज में आगे आकर असहाय, गरीब, अशिक्षित और पीड़ित महिलाओं की रक्षा करनी होगी। वास्तव में सशक्तिकरण का यही स्वरूप ही वास्तविक स्वरूप भारतीय समाज को नई दिशा दें सकेगा।***

कुंजीभूत शब्द–आध्यात्मिक, राजनीतिक, मनोसामाजिक, शैक्षणिक, व्यवसायिक विकास के आयाम ।

भूमिका– महिला सशक्तिकरण का अर्थ, नारी के स्वविवेक, पारिवारिक सामाजिक, राजनैतिक क्षेत्रों में शक्रिय हस्तक्षेप करना। पुरुषों के विरुद्ध अनुचित कार्यों के विरुद्ध खड़े होने की क्षमता में लगाया जा सकता है। राजनीतिक क्षेत्रों में महिलाओं के योगदान को विस्तृत नहीं किया जा सकता है। सरकार द्वारा सुरक्षित पदों पर चयनित महिलाओं की समृद्धि एवं विवेकशीलता को देखा जा सकता है। सरकारी पहल को महिलाओं में जुझारू प्रवृत्ति पनपन लगी है। प्रधान,ब्लॉक प्रमुख, एम.एल.ए, एम.पी, मुख्यमंत्री, राज्यपाल, प्रधानमंत्री एवं राष्ट्रपति आदि पदों पर महिलाओं ने अपनी प्रतिभा का लोहा बनवाया है। कानूनी पहल का आश्रय प्रकार महिलाओं में अपने अधिकारों के प्रति सजगता बढ़ने लगी है। मताधिकार, दहेज एक्ट, स्त्री शिक्षा, घरेलू हिंसा, आंदोलन तथा क्रियान्वित योजनाओं में महिलाओं की अनिवार्यता से प्रगति का मार्ग प्रशस्त हो रहा है। यह मानव विकास के मार्ग में बाधक नहीं वरन साधक है।

शोध की आवश्यकता–महिला सशक्तिकरण पर शोध की आवश्यकता इसलिए आवश्यक है की इससे महिलाओं के सामाजिक, आर्थिक, राजनीतिक और व्यक्तिगत जीवन में सुधार लाया जा सके। यह शोध महिलाओं के अधिकारों अवसरों और निर्णय लेने की क्षमता को बढ़ाने में मदद करता है।

शोध का उद्देश्य–इस शोध का उद्देश्य महिलाओं के बीच भेदभाव और असमानता को समझना, सशक्तिकरण को बेहतर बनाना, सामाजिक परिवर्तन को बढ़ावा देना जैसे –शिक्षा, स्वास्थ्य, आर्थिक अवसर के साथ –साथ राजनीतिक भागीदारी को समझना ।

अनुसंधान पद्धति–यह शोध आलेख द्वितीय डेटा के आधार पर किया गया है ।

- द्वितीय डेटा : सरकारी रिपोर्ट, शोध पत्र एवं समाचारपत्र आदि।
- डेटा का विश्लेषण सांख्यिकी और तुलनात्मक पद्धति से किया गया ।

विकास के मार्ग में कुछ बिंदु विचारणीय है –

1. यह सर्व विदित है कि "नारी की सक्रिय भूमिका को संकुचित रखने के दुष्परिणाम के बल पर नारी जाति तक सीमित नहीं रहे अपितु मानव मात्र को समान रूप से प्रभावित करते हैं।"[1]
2. इतिहास इसका प्रत्यक्ष प्रभाव है "नारी की उपेक्षा का प्रतिफल हृदय विप्लव के साथ राष्ट्र विप्लव के रूप में सामने आया । 1965 में बीजिंग में संपन्न विश्व सम्मेलन मताधिकार तथा मानवाधिकारों के प्रति जागरूकता पर केंद्रित था।"[2]

प्रगतिशील समाज की नीड़ में महिलाओं सहभागिता खाद का कार्य करती है । किसी समाज की उन्नति का अनुमान इस बात से लगाया जा सकता है कि उस समाज की महिलाओं की उन्नति कितनी हुई है ।

3. "आज की लड़कियां विवाह बंधन में बंधने से पूर्व स्वावलंबन के प्रति सजग तथा वैचारिक क्षमता से निर्णय करने लगी है। सेविका, आशा, नर्स, आंगनवाड़ी के साथ ही शिक्षिका, संचालिका, सुपरवाइजर जैसे पदों का गरिमा पूर्ण पालन भी कर रही है। जब महिला आत्मनिर्भर होगी तो स्वाभिमान का भाव स्वत पैदा हो जाएगा । आज महिला मुखिया की तरह स्वाभिमान से युक्त है, जिनसे चौन सिंह जैसे मनुष्य उनके उसके पैरों पर अपना सिर डालकर नाक रगड़ने को विवश हो सके।"[3]
4. "विकास की प्रक्रिया में निरंतरता बनी रहे उसके लिए आवश्यक है कि महिलाओं को अधीनता और निर्भरता की स्थिति से मुक्त कराकर सामानता, न्यायपूर्ण सामाजिक संबंधों पर आधारित जीवन व्यतीत करने के योग्य बनाया जाए।"[4]
5. स्वाभिमान तथा आत्मनिर्भर नारियों ने दूसरों के लिए प्रेरणा का भाव पैदा किया है। विद्योतमा, जीजाबाई, रत्नावली, चांद बीबी, महारानी दुर्गावती, महारानी लक्ष्मी बाई, महादेवी वर्मा, अमृता प्रीतम, मन्नू भंडारी, पुष्पा मैत्रेयी आदि। नारियों के योगदान को कौन विस्तृत कर सकता है।

"शिक्षा वह दीपक है जो मनुष्यों को अंधकार से प्रकाश की ओर आगे बढ़ने का सम रास्ता प्रदान करता है। अंधकार की कटु आलोचना करने से कहीं बेहतर है ज्ञान का दीप प्रज्वलित करना। "5 अनिवार्य शिक्षा, सर्व शिक्षा अभियान, प्रौढ़ शिक्षा, नैतिक शिक्षा, मुफ्त शिक्षा से महिलाओं के दृष्टिकोण में परिवर्तन आने लगा है। अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता शिक्षा द्वारा ही संभव हो सकती है। आत्मनिर्भर होने पर महिला शारीरिक शोषण से मुक्त हो गई है। क्योंकि देह की आबादी स्त्री की आजादी का पहला सोपान माना जाता है।

6. "विकास का पहिया तभी दौड़ सकता है जब हम समानाधिकार का पहल करेंगे। संपूर्ण समाज की प्रगति एवं महिला सशक्तिकरण के लिए शिक्षा की अनिवार्यता आवश्यक है। यह तभी संभव है जब दोनों को कम मिले।"[6]
7. "शिक्षित बालिका ही भविष्य में समर्थ गृह पालिका बन सकती है। अंधविश्वासों, रीति– रिवाजों का डटकर सामना करने के मूल में शिक्षा माहिती भूमिका निभाती है । महिला सशक्तिकरण को सुदृढ़ आधार हेतु पुरुषों की मनोवृति, दृष्टिकोण में बदलाव आवश्यक है।"[7]

8. महिलाओं में निर्णय क्षमता का विकास शिक्षा द्वारा ही संभव है । आज की महिला रचनाकारों मन्नू भंडारी, कृष्णा सोवती, पुष्पा मैत्रेयी, मृदुला गर्ग, मेहरुन्निशा, परवेज, प्रभा खेतान, कौशल्या वैसंती आदि लेखिकाओं ने युगीन ज्वलंत मुद्दों पर अपनी राय से अवगत कराया है । आज नारियां समाज से टक्कर लेती है । स्वार्थी पति को धिक्कारती है, कर्म के लिए प्रेरित करती है । स्वाभिमान के साथ जीकर महिला सशक्तिकरण का रास्ता सुगम करती है । नारी मनोवृति का परिचय इन शब्दों में देखा जा सकता है।

"मैं तुम्हारी या किसी और की दी हुई उधार की जिंदगी नहीं जीना चाहती, अपनी जिंदगी जीना चाहती हूं । पूरी तरह अपनी।"[8]

9. नीका की यह इच्छा अन्य नारियों के लिए प्रेरणा प्रदान करती है। स्वाभिमान के साथ जिगर महिला सशक्तिकरण का रास्ता सुगम करती है।"[9] सिनेमा और विज्ञापन एक दूसरे के पूरक हैं। फिल्म पर लगा प्रतिबंध दर्शकों की जिज्ञासा को बढ़ाता है। फलस्वरूप हिट फिल्म के निर्माता के साथ महिला चरित्र भी प्रसिद्धि के पात्र होते हैं। मधुबाला, नरगिस, कैटरीना कैफ, ऐश्वर्या राय, माधुरी दीक्षित, मीना कुमारी की फिल्म जगत को प्रदान की गई उपलब्धियां से कौन परिचित नहीं है? स्वर साम्राज्ञी लता मंगेशकर के बहुमूल्य योगदान को विस्मृत नहीं किया जा सकता है। उत्पादक विज्ञापन हेतु महिलाओं की आवश्यकता महसूस करने लगे हैं। एक समय था विज्ञान के क्षेत्र में पुरुषों का वर्चस्व था आज समय बदल गया है। कल्पना चावला, सुनीता विलियम्स की अंतरिक्ष यात्रा का वृत्तांत सभी को याद होगा। महिला आरक्षण के विरोध से मनुष्यों के संकुचित दृष्टिकोण का बोध होता है। वह दिन दूर नहीं है यह विरोध सामंजस्य में परिवर्तित होकर महिला सशक्तिकरण को नई दिशा प्रदान करेगा या फिर महिला अधिकारों के लिए सड़क पर निकलना होगा।

सहृदय पाठक समाज से किया गया सुभद्रा कुमारी चौहान का निवेदन– "स्त्री के हृदय को पहचानो और उसे चारों तरफ फैलने और विकसित होने का अवसर दो, यह न भूल जाओ कि उसका भी अपना एक व्यक्तित्व है।"[10]

निष्कर्ष– यदि आप एक पुरुष को शिक्षित करते हैं तो मात्र वह पुरुष शिक्षित होता है, परंतु एक महिला को शिक्षित करते हैं तो पीढ़ियों दर पीढ़ियों शिक्षित हो जाती है । अतरू इधर–उधर दृष्टिपात करने की अपेक्षा यह उचित होगा कि महिलाएं स्वयं प्रेरणा से स्वसंगठित होकर आत्मशक्ति के आधार पर सशक्तिकरण की नवीन परिकल्पना की सूत्रधार बनें। परिवार, समाज तथा राष्ट्र का स्वरूप स्त्री– पुरुष की सहभागिता पर टिका है । भारत का स्वाधीनता आंदोलन महिलाओं की भागीदारी से मुक्त है । जीवनसाथी का चयन के स्थिर के प्रति कागजात तथा अंतरिक्ष की उड़ान को पूरा कर दिखाने के जज्बे से निश्चित ही महिला सशक्तिकरण का मार्ग प्रशस्त होगा ।

सुझाव एवं समाधानः

1. महिलाओं को पुरुष के समान अधिकारों के प्राप्त होने से विकास का मार्ग प्रशस्त होगा ।
2. पुरुषों को कटनी एवं करनी में साथ रखना होगा ।
3. अगर ग्रामीण महिलाओं को भी इस अभियान में शामिल किया जाए तो श्रेयस्कर होगा ।
4. कन्या भ्रूण हत्या तथा ग्रामीण समाज में मैला ढोने जैसी कुरीतियों से लड़ने की पल भी महिलाओं को करनी होगी ।

संदर्भ ग्रंथ सूची

1. जैन, पुखराज, प्रमुख राजनैतिक विचारक, पृष्ठ–75, वर्ष–1998, साहित्य भवन पब्लिकेशन, आगरा ।
2. सिंह, नमिता, वर्त्तमान साहित्य, पृष्ठ–46, मार्च–2008, रामघाट रोड अलीगढ़।
3. किशोर, कृष्ण –अन्यथा, पृष्ठ–216, जून –2008, लुधियाना, पंजाब।
4. प्रसाद, राजेन्द्र हंस, पृष्ठ –66, अप्रैल–2007, अक्षर प्रकाशन, दिल्ली।
5. पाण्डेय, राजेशचंद्र, शोध धारा, पृष्ठ–94, दिसंबर –2006, शैक्षिक एवं अनुसंधान संस्थान, उरई जालौन।
6. हरिनारायण, कथा देश पृष्ठ– 87, जून– 2008, सहयात्रा प्रकाशन, दिल्ली।
7. उजाला, डॉ. सुरेश, उत्तरप्रदेश पृष्ठ–18, दिसंबर –2006, सूचना एवं जनसंपर्क विभाग, लखनऊ।
8. त्रिलोकी, नाथ, साहित्य अमृत पृष्ठ– 08, अप्रैल – 2011, आसफ अली रोड, दिल्ली।
9. स्वदेश भारती, रूपाम्बरा पृष्ठ–108,अंक –135, राष्ट्रीय हिन्दी अकादमी, कलकत्ता।
10. मिश्र, रामेश्वर विश्व भारती, पृष्ठ–49, अप्रैल –2004, हिन्दी भवन साहित्य निकेतन, पश्चिम बंगाल।

*****